

जन समूह 4. भव्य, सुंदर 5. अति उदार जैसे विशाल हृदय।

विशाला वि./स्त्री. (तत्.) 1. बहुत बड़ी, विशाल जैसे- विशाल नगरी 2. उज्जयिनी, उज्जैन नगरी।

विशालाक्ष वि. (तत्.) सुंदर और बड़े नेत्रों वाला, भगवान शंकर, विष्णु, गरुड़।

विशालाक्षी वि./स्त्री. (तत्.) बड़े और सुंदर नेत्रों वाली, पार्वती, सरस्वती, लक्ष्मी।

विशास्त्र वि. (तत्.) जो शास्त्र से रहित हो, जो वेद-शास्त्र को न मानता हो, अज्ञ।

विशिख वि. (तत्.) 1. शिखा रहित, जिसके सिर पर चोटी न हो 2. बाण, तीर 3. नरकुल 4. भाले की तरह का एक अस्त्र, तोमर।

विशिखा स्त्री. (तत्.) 1. छोटा तीर, बाण 2. फावड़ा 3. चरखे का तकुआ 4. सुई।

विशिखासन वि. (तत्.) धनुष, चाप।

विशित वि. (तत्.) पैना, तेज, तीक्ष्ण, नुकीला।

विशिरस्क वि. (तत्.) सिर-रहित, मस्तक-विहीन, जिसका सिर कट गया हो।

विशिरा वि. (तत्.) बिना सिर का।

विशिष्ट वि. (तत्.) 1. किसी विशेषता वाला, विशेषता से युक्त, असाधारण 2. विलक्षण, अद्भुत 3. अतिशिष्ट, जो अन्य की तुलना में अधिक सम्मान प्राप्त हो या उसका अधिकारी हो 4. किसी विशेष गुण आदि का सूचक या उससे युक्त 5. सामान्य से भिन्न और किसी विशेष क्षेत्र, शास्त्र आदि से संबंधित, प्रसिद्ध, यशस्वी 7. निश्चित, सुस्पष्ट।

विशिष्टाद्वैत वि. (तत्.) आचार्य रामानुज द्वारा प्रतिपादित एक विशेष दार्शनिक अद्वैत वेदांती मत जो शंकराचार्य के अद्वैतवाद से थोड़ा भिन्न है, इस मत के अनुयायी "श्रीवैष्णव" कहे जाते हैं, इस मत के अनुसार ब्रह्म जीवात्मा एवं

जगत मूलतः एक होते हुए भी कार्यरूप में भिन्न हैं।

विशिष्टीकरण वि. (तत्.) 1. विशेषीकरण, विशेष बनाना 2. किसी विषय, कार्य आदि में विशेषज्ञता।

विशीर्ण वि. (तत्.) 1. टूटा-फूटा, खंडित, विदीर्ण 2. मुरझाया हुआ 3. पतित, नीचे गिरा हुआ, सूखा हुआ 3. झुर्रियों वाला।

विशुद्ध वि. (तत्.) 1. अति शुद्ध 2. पापरहित, पवित्र 3. निष्कलंक, निर्दोष 4. पूर्णतः सही 5. सत्य, सच्चा।

विशुद्ध चक्र पुं. (तत्.) (हठयोग) शरीर के षट्चक्रों में से पाँचवाँ चक्र जो कंठ में होता है और इसकी आकृति 16 दलों वाले कमल के समान होती है, विशुद्ध चक्र पर मन की स्थिति होने से मन विशुद्ध हो जाता है इसीलिए इसका नाम विशुद्ध चक्र है।

विशुद्धि स्त्री. (तत्.) 1. अति शुद्धता 2. पवित्रता, पापहीनता 3. निष्कलंकता, निर्दोषता 4. सत्यता, सच्चाई 5. त्रुटि, भूल का संशोधन, भूल-सुधार भा.दर्शन मिथ्या ज्ञान आदि की समाप्ति की स्थिति।

विशूचिका स्त्री. (तत्.) विषूचिका, हैजा रोग।

विसूचिका स्त्री. (तत्.) उल्टी और दस्त होने का एक संक्रामक रोग जिसे हैजा भी कहते हैं।

विशेष वि. (तत्.) 1. विशेषता से युक्त जिस कारण वह दूसरी वस्तु/व्यक्ति/बात से भिन्न हो, असाधारण, विलक्षण 2. जिसमें औरों की अपेक्षा कोई नई बात/विशेषता/गुण हो, विशिष्ट 3. असाधारणता, विलक्षणता, विशिष्टता, पहचान 4. अंतर, भेद 5. उत्तमता, श्रेष्ठता, उत्कृष्टता 6. वैशेषिक दर्शन के सात पदार्थों में से एक काव्य. एक अर्थालंकार जहाँ प्रसिद्ध आधार के बिना आधेय का वर्णन हो अथवा जहाँ एक पदार्थ का एक ही स्वभाव से, एक ही समय में अनेक स्थानों पर स्थित होने का वर्णन हो अथवा जहाँ एक कार्य को करते हुए किसी अन्य अशक्य कार्य की सिद्धि का भी वर्णन हो।